

B.A. Sem.-5 Examination
 CC 303 - Sanskrit
 (हिन्दी भाषा और लिपि)

Time : 2-00 Hours]

August-2021

[Max. Marks : 50]

सूचना (१) जमःती तरफना अंक जे ते प्रश्ननो गुण दर्शावे छे.

(२) नीचेना विभाग-१मांथी आठ प्रश्नमांथी गमे ते त्रिंश प्रश्नोना जवाब लझो. विभाग-२मांथी प्रश्न नं. ८ फरजियात छे.

विभाग-१/Part-1

१ नीचे आपेला गधबंडेनु हार्द समजावो :

१४

1 Give explanation of following paragraphs :

14

(१) ज्ञातुमिच्छा जिज्ञासा। अकातिपर्यन्तं ज्ञानं सन वाच्यायाः इच्छायाः कर्म, फलविषयत्वादिच्छायाः।
 ज्ञातिन हि प्रमाणेनावगन्त्मिष्टं ब्रह्म। ब्रह्मावगतिर्हि पुरुषार्थः,
 निःशेषसंसारबीसाविद्याद्यनर्थनिर्बहणात्। तस्मात ब्रह्म वित्रिज्ञासितव्यम्।

(२) ननु ज्ञानं नाम मानसी क्रिया। न वैलदाण्यात्। क्रिया हि नाम सा, यत्र वस्तुस्वरूपनिरपेक्षैव
 चोद्यते, पुरुषचिकाकापाराधीना च। यथा - “यस्यै देवातयै हविरूहीतं स्यात् नां मनसा
 ध्यायेद्वुष्ह्व - करिष्यन्” इति “संध्यां मनसा ध्यायेत्” (ए. ब्रा. ३-८-१) इति चैव मादिषु।

2 सूत्रम् - अधिकरणम् - भाष्यम्। - समजावो/Discuss.

14

3 “अध्यास”नु लक्षण आपी ज्यातिपंचक समजावो.

१४

3 Give definition of “अध्यास:” and discuss about “ख्यातिपंचक”

14

४ अथातो ब्रह्मजिज्ञासा। - १-१-१ - समजावो/Discuss.

14

५ “जन्मादि - अधिकरण” नो सारांश लझो.

१४

५ Give summary of “जन्मादि - अधिकरण”।

14

६ “शास्त्रयोनित्वात्”। १-१-३ नु द्विविध अर्थधटन लझो.

१४

६ Write two interpretation of “शास्त्रयोनित्वात्”।

14

७ आदि शंकराचार्यना ज्ञवन विषयक दंतकथाओ लझो.

१४

७ Write legends about the life of Art Shankaracharya.

14

८ शंकर वेदान्तना मुख्य तात्त्विक सिद्धांतो यर्थो.

१४

८ Discuss about main philosophical principles of शंकरवकांत.

14

विभाग-२/Part-2

९ योग्य विकल्प पसंद करी खाली जग्या पूरो :

०८

9 Fill in the blanks with appropriate answers :

०८

- (१) प्रस्थानत्रयीमां नो समावेश थतो नथी. (उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, मनुस्मृति)
 (२) ब्रह्मसूत्रना रथयितानु नाम छे. (शंकराचार्य, मंडनभिश्र, बादरायण मुनि)
 (३) शंकराचार्यना गुडुनु नाम छे. (पिप्लाद, गोविंद भगवत्पाद, जैभिनि)
 (४) ब्रह्मसूत्रना चारेय अध्यायमां कुलसूत्रो शंकराचार्य मुजब छे. (५५१, ५५७, ५५५)
 (५) आदि शंकराचार्य वेदान्तनी परंपराना प्रवर्तक गङ्गाय छे. (शुद्धदेवत, विशिष्टाद्वैत, (केववाद्वैत)
 (६) शंकराचार्य स्थापेला चार मठोमांथी गुजरातमां भठ आवेलो छे. (शृंगेरी, गोवर्धन, शारदा)
 (७) बादरायण मुनि दर्शनना प्रवर्तक छे. (उत्तरभीमांसा, पूर्वभीमांसा, सांज्य)
 (८) शंकराचार्य तत्वने ऐकमात्र सत्य माने छे. (प्रकृति, जगत, ब्रह्म).